MR. BAIJU BAHRA
DOE
A.N.D. College

22.05.2020

B.Ed - 1st Year
Course - 7(a)
Unit - 1
Topic - Difference in language & Literature

DIFFERENCE IN LANGUAGE & LITERATURE

भाषा मानव के आत्मचिंतन की अभिव्यक्ति का माध्यम है भाषा को एक सरस स्वरूप प्रदान करने के लिए साहित्य की रचना की जाती है। इन दोनों में क्या अन्तर है। इसको निम्न द्वारा समझ सकते हैं।

→ भाषा और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। एक के अस्तित्व के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। इमरसन ने कहा है भाषा और साहित्य के विज्ञान भवन के निर्माण में प्रत्येक मानव ने एक ईंट-पत्थर रखकर अपना योगदान दिया है।

→ भाषा केवल अभिव्यक्ति है व साहित्य हितकारिता के कारण सुरक्षणीय। भाषा और साहित्य में अन्योन्याश्रित संबंध होते हुए भी अन्तर विद्यमान है। भाषा तो केवल विचाराभिव्यक्ति एवं भावाभिव्यक्ति मात्र है लेकिन जब उसमें हितकारिता को भी सम्मिलित कर दिया जाय तो हितकारिता के कारण सुरक्षणीयता उत्पन्न हो जाती है जिससे कि वह उस भाषा में लिखा हुआ साहित्य कहलाने लगता है।

→ भाषा का आश्रित होते हुए भी साहित्य भाषा का आश्रयदाता भी है। भाषा के आधार पर ही साहित्य सत्तवान होता है। यदि साहित्य में से भाषा को

विकास किया जाए तो यदि अभिव्यंजना। इसी साहित्य को रूप प्रदान करने वाले विचार, भाव, कल्पना तथा शैली तत्व संभवतः स्वाधीन हो जायें। यदि वे नितान्त स्वाधीन न भी हों तो भी स्वाभाविक विकासक्रमानुसार न जाने कि व्याप्ति संभव न हो सकेगी। भाषा पर साहित्य और हुए भी वास्तव में देखा जाये तो साहित्य भाषा का आश्रयदाता भी है। साहित्य द्वारा प्रयुक्त शब्दों से ही भाषा स्वरूप संवरता है व निखरता है और इसी से उसमें शक्ति भी उत्पन्न होती है।

→ भाषा और साहित्य दोनों की प्रगति साथ-साथ होती है। अर्थात् भाषा और साहित्य का महत्व सोचकर ही नहीं परिभाषित करवाया जा सकता लेकिन भाषा और साहित्य दोनों समान है।

→ भाषा पर पूर्णाधिकार साहित्य के निरन्तर व गहन अध्ययन से ही संभव है। यदि कोई व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता, लेखक बनना चाहता है तो उसके लिए भाषा पर पूर्णाधिकार प्राप्त करना आवश्यक होगा, लेकिन भाषा पर पूर्णाधिकार साहित्य के निरन्तर व गहन अध्ययन से ही संभव होगा। साहित्य शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों का अथाह भण्डार है। साहित्य अध्ययन द्वारा विविध भाषा शैलियों से व्यक्ति परिचित होता है, धीरे-धीरे उसकी विचाराभिव्यक्ति व भावाभिव्यक्ति रमणीय एवं सजीव प्रभावोत्पादक हो जाती है।

भाषा ही साहित्य की जननी है इसके बिना साहित्य की कल्पना संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner